विभारानी

मैथिलीक नवोदित कथाकारमे प्रसिद्ध विभारानीक जन्म 1959 ई. मे भेल। मधुबनी शहरमे स्थायी निवास स्थान छनि मुदा इंडियन ऑयल कॉरपोरिशन, पश्चिमी क्षेत्र, मुंबइमे उपप्रबन्धकक रूपमे कार्यरत छथि। हिनक 'खोह सँ निकसइत' मैथिली कथा-संग्रह मैथिली जगतमे अति चर्चित अछि। हरिमोहन झाक 'कन्यादान' एवं प्रभास कुमार चौधरीक 'राजा पोखरिमे कतेक मछरी' उपन्यासक हिन्दी अनुवाद हिनका द्वारा कयल गेल अछि। अपन सारस्वत साधनाक प्रसादात् हिनका कथा अवार्ड (मैथिली कथा 'रहथु साक्षी छठ घाटक लेल'), डा0 महेश्वरी सिंह महेश ग्रन्थ सम्मान, तथा घनश्याम दास सराफ । साहित्य सम्मान प्राप्त भेल। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीमे सेहो हिनक अनेकानेक रचना पुस्तकाकार प्रकाशित अछि ताहिमे मिथिलाक लोक कथाएँ प्रसिद्ध अछि।

प्रस्तुत कथा भारतीय जनजीवनक दयनीय दशाक एक गोट मार्मिक चित्र उपस्थित करैत अछि। हमरा लोकनिक समाजमे कतेको गोटे एहन हतभाग अछि जकरा भरि पेट भोजन भाग्यमे नहि लिखल छैक। ओ दिन-राति काज करैत अछि, मुदा अन्नक बिना ओकर बाल-बच्चा भुखल रहैत अछि। भरि छीपा भातक दर्शन ओकर लेल दुर्लभ अछि। कथाक अन्त विषादसँ होइत अछि।

भरि छीपा भात

तहिया हमरा देखिते ओ कोइली जकाँ कुहुकि उठलि। ओकर आँखिक कोटरमे एगो चीज छन्न दऽ समा गैले। रातिरानी सन गंध स' भीजैत ओकर मोन भोरका पुरबासँ सिहकइत देह जकाँ भुलकि गेलै। बोलीमे चिन्नी मिलबइत बाजलि छलि-'कहिया एलौं ?'

गाम-घरमे प्रसिद्ध छैक जे बतहिया लौंगिया मिरचाइ छैक, किन्तु बेर-कुबेर ओ गूड़क भेली भ' जाइ छैक, अनमन वैह फकरा जकाँ -'जेम्हरे देखली खीर, तेम्हरे बैसली फीर'। रामपट्टीबाली कहैत छलै-'दुलहिन, अहाँ एकर बातमे नहि आएब। ई त' अहाँ स' मीठ-मीठ बतिया क' तेहन ने छुरी चलाओत जे अहाँ बुझबो नहि करबइ।'

हरिपुरवाली समर्थन करैत बाजल छलीह हँ सत्ते, अहाँकेँ त' ओ सोझे सोझ हाटमे बेचि क' चलि आओत आ फेर कहबो करत जे हम कहाँ किछु कहलहुँग'।'

कहाँदनि बतहियाक नाम जन्मे स' इएह छलैक। ओना ओ अपन नाम फुलेसरी बतौने छलि। मुदा, लटपटाइत बोली आ अलबटाह चालि ओकर नामकरणक सार्थकता दइत रहैछ।

ओ तोतरा क' अपन टोलक गाथा सुनबैत अछि। तेहेन लोकक, जकर हम नामो नञि जनैत अछि। मुँहो नञि देखने छी। ओकर ई बोली एक त' हमर दिमागेमे नहि घुसय जे घुसय ओ परिचयक अभावमे सूखि जाय। तइयो 'हूँ हूँ' कहने बगैर गुजर नहि छैक। बतहिया तुरतें तगेदा करत -' ओ जे चुल्हिया माय नञि छइ, हे वएह पुबरिया टोलमे जेकर घर छइ। डोमाक घरवाली, सुरताक माय ..... ' आ बेबस हमर गर्दनि स्वीकृति से हिलिए जाइए।

कखनो-कखनो बतहिया एकदम चुप्प भ' जाइत छैक। रहिकावाली बजैत छै जे "बतहिया पर ओकर मतारिक भूत अबै छै आ ओ गुम्मी साधि लेइ छै।"

ओकरा चारिटा धिया-पुता छैक -चारू कारी, नांगट। हाथ गोर लकड़ी आ पेट कुम्हड़ सन। छोटकी छौंड़ीकेँ लऽ अबैत छै आ रोटी माँगि ओकरा थमा दइत छै। छौंड़ीक विरोध कएनो सन्ता जबर्दस्ती ओकरा मुँहमे रोटी ठुसैत छै। पाछासँ 'गदागद मुकियाब' लागै छै।

सासु बजैत छथिन्ह -'रे बतहिया; ए तरहेँ काहे मार' तारीस ओकरा। छोड़ दे, ना खाई

त' । भूख ना होखी ..... का रे, घरे का खइले रहे ?''

'डेढ़ टा मरुआक सोहारी'। छौंड़ी महीन आवाजमे बजैछ आ डगरा सन -मरुआ-रोटीक आकृति आँखि पर नाचि जाइत छैक आ सासु स्तब्ध भ' जाइत छथिन्ह। बतहिया प्रतिवाद करैत छैक-'' त' की भेलै ? गहूँमक रोटी नहि खेलकइग' ने ! मरुआ रोटी त' हल्लुक होअ छै।''

ओकर ओकालती बात पर सासु पिताएल छलीह- "अब बताब', एतनी गो लइका -एतना बड़-बड़ रोटी खा गइली आ ई कह' तारी जे कुछहू खइलेही नइखे। पेटमे जगहिया रही तबे न खाई रे। ''

नरपतिनगरवाली कहने छलह जे ''मौगी बड्ड लोभी छै। कतबो किओ ने खएने रहत, कखनो नञि कहत जे खेने छी। गोटएक दिन ओकर मुँह-पेट सेहो चल' लगैत छै। बुझबे नहि करैत छैक धोंछिया।''

बतहिया हमर हाथ-गोरमे तेल लगबैत अछि। बड़ नीक जकाँ देह जँते छै। मालिश करैत कहैत छैक-''दुलहिन, हमरा एगो रुपया देब ? तेल लाएब .....? हँ, मुदा हमरा एकटकही नहि देब ..... चारिटा चवन्नीए द' देब। नोट त' एकेगो होइ छै। चवन्नी चारिटा भेट जाएत।'' आ आंगुरिक पोर पर चारू चवन्नीसँ अपन बजट बनाब' मे लीन भ' जाइत छल।

बतहियाक गप्पक गाड़ी एहिना आगाँ बढ़ैत-बढ़ैत कखनो ठमकि जाइछ-' हे यै दुलहिन, अहाँ नमरी देखने छियै ?

कहियो ओकरो आँखिमे सरिसो फुलायल छलैक। हमरास' एक दिन मजाक कयलकै। हमहूँ किछु बजलहुँ त' कहलकैक-'' बुढ़बा बड़ तंग करैए। हे, राति-बेराति आओत आ हाथ पकड़ि क' घीच' लागैयए। मरदाबा बड़ बेशरमा छै। धीया-पुता ओही घरमे सुतल रहै छै। कनियो लाजो-धाखो नहि करत ।''

जतबे सहज ढंग सँ ओ ई सभ गप्प कहि गेल ततबे सहज ढंग सँ ओ एकबेर बाजल छल-' बुढ़बा मरि गेलै। 'धक्कसँ रहि गेलहुँ। ओना ओकरा देह पर कहियो कोनो सुहागक चेन्ह नहि छलै- चीकट गुदड़ी भेल ननगिलाटक नूआ, पाखीक खोता जकाँ केश, कुशियारक गांठ जकाँ हाथ-गोर। ने चूड़ी-लहठी, ने तेल सेनुर । निम्न वर्ग अपन अभावे एकर पूर्ति नहि क' पबैत अछि। उच्च वर्ग अपन शोभामे एकरा आवश्यक नहि बुझय।' बाँचि गेल मध्यम वर्गक स्त्री लोकनि, जे तीनू वर्गक प्रतिनिधित्व करैत महावीरी धाजा जकाँ लाल नूआँ, अढ़ाइ सेरक चूड़ी, लहठी आ सवा सेर सेनूर धारण क' साक्षात वीर-बहू' बनल रहैय।

सासु कहै छलखिन्ह- ''एकर अदमी मरल त' ई तनिको ना रोइल। चार दिनक बाद खेतमे धान काटे जाए लागल। बुझाते ना रहे जे ओकरा संगे कोनो अइसन ओइसन बातो भइल होखे।''

रामपट्टीवाली टुभुकली- ''त' किए कनितै ग'। ओकरा कोनो सुख भेलै, बुढ़बासँ। सभदिन अपने कमाइ पर ओ गुजर करैत आयल ग'। चारि टा मूस बिया लेलकै ग' सए टा ने!''

बतहिया फेर आयल छलि-''दुलहिन, चलू तेल लगा दू।'' ओकरा आँखिमे चारि टा चवन्नि नाचि गैले। माथ पर भरि चुल्लू तेल दइत बाजल छल-''दुलहिन, अहाँ कहियो भरि छीपा भात खेने छी ?''

''ई की ? आदमी छी कि राकस गे ?''

'' ने-ने, हमरा होइयए जे भरि छीपा भात देख' मे कतेक नीक लागैत हेतै ? आ ताहूमे अरबा चाउरक। कतेक सुन्दर महक होइ छै। हमर बुढ़बा चारि-पाँच बेर ओहन भात खइने छल। आधा-आधा छीपा आनबो कएने रहय, मुदा चारिटा टेल्हबा-टेल्हबीमे किछु रह' पबै छैक ..... दुलहिन यै, बड़ नीक लागइ होएतै ने भरि छीपा भात देख - 'सुन' मे !''

रहिकावाली गुम्हरइल हमरा सचेत कएने छली - '' मौगी बड़ घाघ छै। अहाँ ओकरा आउरक फेर मे नै पड़ब। ई त' तेहन ने ओस्ताद अइ जे सात कोसक चक्करि लगा आओत आ तइयो कहत जे पेट पिराइ छल, कतहु नहि गेलियैग'।''

सासु समर्थन कएने छलीह - '' हँ, बताब' न , अबहई अगहन के महिनवाँ मे जत कुत्तो-बिलाई के पेट अफरल रहेला; भरो -भिखार अगड़ैनी कँ साग चबा-चबा के सुतल रहेला, ओहिजा ई लुगाई खेत मे कटनी करे जाला। ततो कबो ना कह सके जे आज भर पेट खइले बानी; केहु तरहे ई बतिया कह ना सके।''

हम कहलियन्हि -'' माँ, किएक नहि एकर जांच कएल जाए। एक छीपा भात ओकरा सोझामे ध' क' देखै छियै।'' आ तें कुशल मनोवैज्ञानिक जकाँ ओकर मन:स्थितिक परीक्षा लेल जुटि गेलहुँ।

अगहन मास। गृहस्थक पुतोहु। सुगंधित अरबा चाउरक भरि छीपा भात। सोझामे बतहिया। हमर उक्ति -'' ले बतहिया, आइ पूरा क' ले मोनक साधं खा ले भरि छीपा भात।''

बतहिया, कँ पहिने त' बुझयलै जे ओ कोनो सपना त' नञि देखैत अछि। फेर तेना ने

घौनाक' क' कान' लागलि जेना ओकर हीत मरि गेल होय। एहि प्रयोगक ई परिणति पर सासु आँखिए सँ हमरा प्रताड़ित कएलीह। रामपट्टीवाली अँचरामे मुँह झाँपी हँस' लगलीह। । रहिकावाली मुँह बिधुआ लेलैन्हि। नरपतिनगरवालीक मुँह पर तेहन भाव आएल जे अनेरे ओ भात बतहिंयाक सोझामे राखि देल गेलै। बानरक हाथमे नारिकेर।

बतहियाक झौहरि शेष भेलै त' ओ हिचुकइत बाजलि - '' एहिठाम हमरा खा' नहि हएत, दुलहिन। हमरा द 'दिय' भात । घरही हम लऽ जाएब।

दोसर दिन फेर चारिटा चवन्नी ओसुलइत बतहिया कहै छलि-'' भरि छीपा भात देखक साध पूर भ' गेल, दुलहिन। भगवान चाहत त' अहींक पुन्न-परतापें भरि छीपा भातो खाइए लेब।

पएर समेटइत चट स' पूछि बैसलिऐ - ''ई की ? त' काल्हि भातक की अचार बना देलही ?''

'' नै, नै ! '' ओ हड़बड़ा गेलि - ''छौड़ा-छौड़ी सभ रह'' 'देलकइग' जे .....

'' तें ने कहने छलियौ जे अहीठाम खा ले। ''

'' कोनाक' खा लितियइग', दुलहिन ! ओ सब उपासे रहि जइतै ने ! ओ सभ भरिपेट खा लेलक, सैह देखि हमरो पेट भरि गेल। मोन तिरपित भ' गेल। ''

शब्दार्थ

छीपा - थारी

भुलकिगेलै - रोमांचित भ' गेलै

अनमन - ओहने । ठीक ओहिना

प्रतिवाद - विरोध

ओस्ताद - गुरु

चीकट - मइल

प्रश्न ओ अभ्यास

1. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू-

(i) भरि छीपा भातक रचयिता छथि -

(क) लिलीरे (ख) उषाकिरण खाँ

(ग) विभारानी (घ) शेफालिका वर्मा

(ii) बतहियाकपति छल-

(क) बुढ़बा (ख) युवक

(ग) किशोर (घ) अधवयसू

2. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) विभारानीक अहाँक पाठ्य-पुस्तकमे कोन कथा संकलित अछि ?

(ii) बतहियाकेँ कैकटा संतान अछि ?

(iii) बतहियाकेँ की देखबाक लालसा छल।

(iv) बतहियाक बात पर कोन महिला हँसय लागलि ?

(v) बतहियाक बोली केहन छल ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) भरि छीपा भातक सारांश लिखू।

(ii) कथाक मुख्यपात्र बतहियाक चरित्र - चित्रण करू।

(iii) 'भरि छीपा भात' कथाक उद्देश्य स्पष्ट करू ।

4. निम्नलिखित शब्दक प्रयोग वाक्यमे करू-

अलबटाह, तगेदा, लटपटाइत, चाउर, गुम्हरइत, अफरल।

गतिविधि -

(i) छात्र एक गरीब बस्तीकेँ लोकजीवनक अध्ययन करथि।

(ii) एक मजदूरनी आ दोसर मालकिनीक बीच बार्त्तालाप करैत देखाउ।

(iii) छात्र लोकनिक बीच समाजक गरीबीक कारण पर भाषण प्रतियोगिता कराओल जाय।

निर्देश-

(i) शिक्षक छात्र लोकनिक बीच एक गरीब परिवारक दशाक वर्णन करथि।

(ii) सड़ककातमे ऐंठ पात चटैत बालवृन्दक चित्र छात्र लोकनि बनाबथि।

—